अध्याय 13: पहलवान की ढोलक (फणीश्वर नाथ रेणु) - महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. **'पहलवान की ढोलक' कहानी के लेखक कौन हैं?**
    - **(क) जैनेंद्र कुमार**
    - **(ख) फणीश्वर नाथ रेणु**
    - **(ग) धर्मवीर भारती**
    - **(घ) महादेवी वर्मा**
    - **उत्तर: (ख) फणीश्वर नाथ रेणु**
2. **लुट्टन सिंह पहलवान के गुरु कौन थे?**
    - **(क) बादल सिंह**
    - **(ख) काला खाँ**
    - **(ग) ढोलक**
    - **(घ) राजा साहब**
    - **उत्तर: (ग) ढोलक**
3. **लुट्टन ने श्यामनगर के दंगल में किसे चुनौती दी थी?**
    - **(क) काला खाँ को**
    - **(ख) बादल सिंह को**
    - **(ग) चाँद सिंह को**
    - **(घ) अपने बेटों को**
    - **उत्तर: (ग) चाँद सिंह को**
4. **चाँद सिंह के गुरु का क्या नाम था?**
    - **(क) लुट्टन सिंह**
    - **(ख) सूरज सिंह**

- (ग) बादल सिंह
- (घ) श्यामानंद
- उत्तर: (ग) बादल सिंह

5. राजा साहब की मृत्यु के बाद राज्य की सत्ता किसने संभाली?
   - (क) लुट्टन सिंह ने
   - (ख) पुराने मैनेजर ने
   - (ग) विलायत से आए राजकुमार ने
   - (घ) चाँद सिंह ने
   - उत्तर: (ग) विलायत से आए राजकुमार ने
6. राजकुमार ने कुश्ती के स्थान पर किस खेल को प्राथमिकता दी?
   - (क) फुटबॉल
   - (ख) क्रिकेट
   - (ग) घोड़ों की रेस
   - (घ) कबड्डी
   - उत्तर: (ग) घोड़ों की रेस
7. गाँव में कौन-सी बीमारियाँ फैली हुई थीं?
   - (क) मलेरिया और हैजा
   - (ख) चेचक और बुखार
   - (ग) प्लेग और मलेरिया
   - (घ) टी.बी. और हैजा
   - उत्तर: (क) मलेरिया और हैजा
8. 'चटाक्-चट्-धा' का ढोल की भाषा में क्या अर्थ था?
   - (क) मत डरना

- **(ख) उठा पटक दे**
- **(ग) दाँव काटो**
- **(घ) वाह बहादुर**
- **उत्तर: (ख) उठा पटक दे**

9. लुट्टन पहलवान के कितने पुत्र थे?

- **(क) एक**
- **(ख) दो**
- **(ग) तीन**
- **(घ) चार**
- **उत्तर: (ख) दो**

10.लुट्टन की अंतिम इच्छा क्या थी?

- **(क) उसे महल में दफनाया जाए**
- **(ख) उसे चित नहीं बल्कि पेट के बल सुलाया जाए**
- **(ग) उसकी ढोलक जला दी जाए**
- **(घ) चाँद सिंह को बुलाया जाए**
- **उत्तर: (ख) उसे चित नहीं बल्कि पेट के बल सुलाया जाए**

2. एक पंक्ति वाले प्रश्न (One Line Q&A)

1. लुट्टन सिंह को किसने पाल-पोसकर बड़ा किया था?

- **उत्तर: उसकी विधवा सास ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था।**

2. लुट्टन ने पहलवानी सीखने की ठानी क्यों थी?

- **उत्तर: अपनी सास को तकलीफ देने वाले गाँव वालों से बदला लेने के लिए उसने पहलवानी शुरू की।**

3. चाँद सिंह को 'शेर का बच्चा' की उपाधि कहाँ मिली थी?

- **उत्तर: श्यामनगर के दंगल में पंजाब से आकर उसने यह उपाधि प्राप्त की थी।**

4. लुट्टन ने चाँद सिंह को हराने के बाद सबसे पहले किसे प्रणाम किया?
    - उत्तर: लुट्टन ने सबसे पहले ढोलों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया।
5. राजकुमार ने पहलवान और उसके बेटों के खर्च को क्या कहकर मना कर दिया?
    - उत्तर: राजकुमार ने खर्च सुनकर "टैरिबुल" (Terrible) कहा।
6. गाँव लौटने पर लुट्टन का गुजारा कैसे होता था?
    - उत्तर: गाँव वालों द्वारा बाँधे गए राशन और लड़कों की मजदूरी से उसका गुजारा होता था।
7. महामारी के दौरान गाँव की रातें कैसी होती थीं?
    - उत्तर: रातें ठंडी, काली और सन्नाटे से भरी होती थीं, जहाँ केवल कराहने की आवाजें आती थीं।
8. पहलवान की ढोलक मृत गाँव में क्या भरती थी?
    - उत्तर: पहलवान की ढोलक मृत गाँव में 'संजीवनी शक्ति' भरती थी।
9. लुट्टन के बेटों की मृत्यु किस कारण हुई?
    - उत्तर: मलेरिया और हैजे की महामारी के कारण उसके दोनों बेटों की मृत्यु हुई।
10. लुट्टन सिंह कितने वर्षों तक राज-पहलवान रहा?
    - उत्तर: वह लगभग पंद्रह वर्षों तक राज-पहलवान रहा।

3. तीन पंक्ति वाले प्रश्न (Short Answer Q&A)

1. चाँद सिंह और लुट्टन की कुश्ती के समय दर्शकों की क्या स्थिति थी?
    - उत्तर: शुरुआत में दर्शक लुट्टन को 'पागल' समझ रहे थे और चाँद सिंह के पक्ष में थे। लेकिन जैसे ही लुट्टन ने दाँव काटा, जनमत बदलने लगा और कुछ लोग लुट्टन का समर्थन करने लगे। अंत में उसकी जीत पर पूरा मैदान जयकारों से गूँज उठा।
2. लुट्टन पहलवान ने ढोल को अपना गुरु क्यों माना?
    - उत्तर: लुट्टन ने कुश्ती के दाँव-पेंच किसी इंसान से नहीं, बल्कि ढोल की थाप से सीखे थे। ढोल की हर आवाज उसे एक नया निर्देश और जोश देती थी,

जैसे– "उठा पटक दे" या "दाँव काटो"। इसीलिए वह ढोल को ही अपना असली गुरु मानता था।

3. राजा साहब और राजकुमार के शासन में पहलवान के प्रति क्या अंतर आया?
    - उत्तर: वृद्ध राजा साहब लुट्टन को स्नेह देते थे और उसकी कला का सम्मान करते थे। इसके विपरीत, विलायत से आए राजकुमार ने कला की जगह उपयोगिता (घोड़ों की रेस) को महत्व दिया और पहलवान को "फालतू खर्च" मानकर दरबार से निकाल दिया।
4. महामारी के समय ढोलक की आवाज का गाँव वालों पर क्या प्रभाव पड़ता था?
    - उत्तर: ढोलक की आवाज महामारी को रोक तो नहीं सकती थी, लेकिन वह मरते हुए लोगों को हिम्मत देती थी। उसकी थाप सुनकर लोगों के भीतर जीवन की इच्छा जागती थी और वे मृत्यु के डर से मुक्त होकर शांति से प्राण त्याग पाते थे।
5. लुट्टन के बेटों की मृत्यु पर उसकी बहादुरी का परिचय कैसे मिलता है?
    - उत्तर: जब उसके दोनों बेटे महामारी की भेंट चढ़ गए, तब भी वह टूटा नहीं। उसने रात भर ढोल बजाकर उन्हें प्रोत्साहित किया और सुबह उनके शवों को अकेले ही कंधे पर लादकर नदी में बहा आया। उसकी यह असीम सहनशक्ति देखकर गाँव वाले दंग रह गए।
6. "ढोलक की थाप मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती थी" - स्पष्ट कीजिए।
    - उत्तर: महामारी के कारण गाँव में चारों ओर मौत का सन्नाटा छाया रहता था। ऐसे में पहलवान की ढोलक सन्नाटे को चुनौती देती थी। वह आवाज लोगों की शिथिल नसों में बिजली जैसा जोश भर देती थी और उन्हें अकेलेपन के डर से बचाती थी।
7. लुट्टन की वेशभूषा और स्वभाव मेलों में कैसा होता था?
    - उत्तर: वह मेलों में अबरख का रंगीन चश्मा पहनकर, पीतल की सीटी बजाते हुए और खिलौनों के साथ एक बच्चे की तरह घूमता था। वह ढेर सारे रसगुल्ले खाता और पान चबाता था। शरीर से पहलवान होते हुए भी उसका मन बच्चों जैसा सरल था।
8. कहानी के अंत में 'फटे ढोल की पोल' किस ओर संकेत करती है?

- उत्तर: यह लुट्टन की मृत्यु और उसके साथ ही एक लोक-कला (कुश्ती) के अंत की ओर संकेत करती है। नई व्यवस्था ने उस पहलवान को असहाय छोड़ दिया था, जिसके कारण अंततः उसकी जीवन-लीला और उसकी ढोलक की आवाज हमेशा के लिए मौन हो गई।

9. व्यवस्था बदलने के साथ लोक-कलाकार कैसे अप्रासंगिक हो जाते हैं?

   - उत्तर: जब सत्ता का केंद्र बदलता है (राजा से राजकुमार), तो अक्सर पुरानी परंपराएं और कलाकार उपेक्षित कर दिए जाते हैं। नई व्यवस्था आधुनिकता के नाम पर पुरानी लोक-कलाओं को 'बोझ' समझने लगती है, जिससे लुट्टन जैसे कलाकार दाने-दाने को मोहताज हो जाते हैं।

10. लुट्टन ने अंतिम समय में पेट के बल लेटने की इच्छा क्यों व्यक्त की?

    - उत्तर: लुट्टन एक स्वाभिमानी पहलवान था जो अपनी पूरी जिंदगी में कभी किसी से 'चित' (पराजित) नहीं हुआ था। वह मृत्यु के सामने भी पराजित नहीं दिखना चाहता था, इसलिए उसने अपनी अजेयता के प्रतीक के रूप में पेट के बल लेटने की इच्छा जताई।

4. पाँच से छह पंक्ति वाले प्रश्न (Long Answer Q&A)

1. 'पहलवान की ढोलक' कहानी में चित्रित गाँव की दयनीय स्थिति का वर्णन कीजिए।

   - उत्तर: फणीश्वर नाथ रेणु ने गाँव का अत्यंत हृदय विदारक चित्रण किया है। सर्दी के मौसम में अमावस्या की काली रात में पूरा गाँव मलेरिया और हैजे की चपेट में था। झोपड़ियों से केवल कराहने और उल्टियाँ करने की आवाजें आती थीं। लोग इतने कमजोर हो चुके थे कि अपने मरते हुए बच्चों को 'बेटा' कहकर पुकारने की हिम्मत भी नहीं जुटा पाते थे। सूर्यास्त होते ही सन्नाटा पसर जाता था और लोग डर के मारे अपनी आँखों को मूँद लेते थे। चारों ओर केवल अंधकार, सन्नाटा और मौत का साम्राज्य था, जिसे केवल पहलवान की ढोलक ही चुनौती दे पाती थी।

2. लुट्टन सिंह पहलवान के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

   - उत्तर: लुट्टन सिंह एक संघर्षशील, जीवट और स्वाभिमानी पात्र है। बचपन में अनाथ होने और सामाजिक प्रताड़ना झेलने के बाद उसने अपनी मेहनत से खुद को एक महान पहलवान बनाया। वह अपनी जड़ों (ढोलक) के प्रति अत्यंत

वफादार था। उसके चरित्र में जहाँ एक ओर साहस और अजेयता है, वहीं दूसरी ओर बच्चों जैसी सरलता और संवेदनशीलता भी है। वह दुखों के पहाड़ टूटने (पत्नी और बेटों की मृत्यु) के बावजूद अपने कर्तव्य (ढोलक बजाना) से पीछे नहीं हटा। उसका पूरा व्यक्तित्व विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानने वाले मानवीय जज्बे का प्रतीक है।

3. इस कहानी के माध्यम से लेखक ने 'भारत' और 'इंडिया' के द्वंद्व को कैसे उभारा है?
    - उत्तर: लेखक ने पुरानी व्यवस्था (राजा साहब) को 'भारत' यानी ग्रामीण और सांस्कृतिक संवेदनाओं का प्रतीक माना है, जहाँ कलाकारों को सम्मान मिलता था। वहीं नई व्यवस्था (राजकुमार) 'इंडिया' का प्रतीक है, जो पश्चिमी आधुनिकता और उपयोगितावाद पर आधारित है। राजकुमार के लिए कुश्ती एक "भयानक" (Terrible) और फालतू खर्च थी, जबकि घोड़ों की रेस लाभदायक थी। यह बदलाव लुट्टन जैसे लोक-कलाकारों को हाशिए पर धकेल देता है। कहानी दिखाती है कि कैसे आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी मिट्टी की कलाओं और कलाकारों को खोते जा रहे हैं।
4. लुट्टन की जीत में ढोलक की क्या भूमिका थी? विस्तार से समझाइए।
    - उत्तर: लुट्टन के लिए ढोलक केवल एक वाद्य यंत्र नहीं, बल्कि उसकी प्रेरणा और गुरु थी। चाँद सिंह के साथ कुश्ती के दौरान जब वह चारों ओर से घिर गया था, तब ढोल की आवाज ने उसे दाँव सिखाए। 'धाक-धिना, तिरकट-तिना' की आवाज उसे दाँव काटकर बाहर निकलने का संदेश दे रही थी, जबकि 'चटाक्-चट्-धा' उसे प्रतिद्वंद्वी को उठाकर पटकने के लिए उकसा रही थी। ढोलक की थाप ने उसके भीतर वह आत्मविश्वास भरा जो राजमत या जनमत नहीं दे सका था। उसकी जीत वास्तव में ढोलक के निर्देशों का ही परिणाम थी।
5. "कला की प्रासंगिकता व्यवस्था की मुखापेक्षी है" - क्या आप इस कथन से सहमत हैं? कहानी के संदर्भ में उत्तर दीजिए।
    - उत्तर: हाँ, यह कहानी सिद्ध करती है कि कला को जीवित रहने के लिए अक्सर सत्ता या समाज के संरक्षण की आवश्यकता होती है। लुट्टन तब तक फल-फूल सका जब तक राजा साहब का संरक्षण था। जैसे ही राजकुमार ने व्यवस्था बदली, लुट्टन की कला 'अप्रासंगिक' हो गई। गाँव में भी गरीबी के

कारण लोग पहलवानी को पाल नहीं सके। हालांकि, लुट्टन ने महामारी के दौरान ढोल बजाकर यह साबित किया कि कला का एक स्वतंत्र मूल्य भी है– वह समाज को मानसिक शक्ति देती है। लेकिन आर्थिक आधार के बिना किसी भी कलाकार का अंत लुट्टन की तरह दुखद ही होता है।

6. महामारी के दौरान ढोलक बजाना लुट्टन के किस मानवीय मूल्य को दर्शाता है?
    - उत्तर: यह लुट्टन की 'परोपकार' और 'सामूहिक जिम्मेदारी' की भावना को दर्शाता है। वह जानता था कि उसकी ढोलक दवा का काम नहीं कर सकती, लेकिन वह यह भी जानता था कि टूटते हुए हौसलों को सहारा देना सबसे बड़ा धर्म है। अपने स्वयं के बेटों को खोने के बाद भी वह दूसरों के लिए ढोल बजाता रहा ताकि गाँव वाले शांति से अपनी अंतिम यात्रा पूरी कर सकें। यह उसके 'महामानव' रूप को प्रकट करता है, जो अपने व्यक्तिगत दुखों को दबाकर समाज को हिम्मत देने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देता है।
7. कहानी में प्रयुक्त ध्वन्यात्मक शब्दों (जैसे गिड़-धा, चटाक्-चट्-धा) के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
    - उत्तर: रेणु जी ने इन शब्दों के माध्यम से गद्य में भी संगीत और जीवंतता पैदा कर दी है। ये शब्द पाठक के मन में कुश्ती के मैदान और ढोल की थाप का सजीव दृश्य उपस्थित कर देते हैं। ये शब्द केवल ध्वनियाँ नहीं हैं, बल्कि लुट्टन की भाषा हैं जिससे वह संवाद करता है। ये शब्द कहानी की आंचलिकता को मज़बूत करते हैं और पहलवान के क्रियाकलापों के साथ एक अद्भुत सामंजस्य बिठाते हैं। इनके बिना कहानी का प्रभाव और पहलवान का संघर्ष इतना प्रभावशाली नहीं लग पाता।
8. लुट्टन के जीवन के उतार-चढ़ावों से हमें क्या सीख मिलती है?
    - उत्तर: लुट्टन का जीवन हमें यह सिखाता है कि सफलता और विफलता जीवन के दो पहलू हैं। आज जो आसमान पर है, कल वह धूल में भी मिल सकता है (जैसे राज-पहलवान से गाँव की झोपड़ी तक की यात्रा)। लेकिन असली मनुष्य वही है जो हर स्थिति में अपने 'धर्म' और 'कला' के प्रति निष्ठावान रहे। वह हमें सिखाता है कि विपरीत समय में भी हमें दूसरों का सहारा बनना चाहिए। लुट्टन की अजेयता उसके शरीर में नहीं, बल्कि उसकी उस आत्मा में थी जो अंतिम सांस तक किसी के सामने 'चित' नहीं हुई।

9. फणीश्वर नाथ रेणु की 'आंचलिकता' इस कहानी में किस प्रकार प्रकट हुई है?

- **उत्तर: रेणु जी 'मैला आँचल' के लिए प्रसिद्ध हैं और इस कहानी में भी उन्होंने गाँव के परिवेश, वहाँ की भाषा, अंधविश्वास, गरीबी और लोक-संस्कृति का कच्चा और अनगढ़ चित्रण किया है। कहानी में प्रयुक्त ग्रामीण संवाद, ढोलक की थाप के देशी बोल, और गाँव में फैली महामारी का वर्णन आंचलिकता को पुष्ट करता है। उन्होंने किसी महान नायक के बजाय एक साधारण ग्रामीण पहलवान (अंचल) को नायक बनाया है। गाँव की मिट्टी, वहाँ के त्योहार और भूख की त्रासदी इस कहानी को एक सच्चा आंचलिक दस्तावेज बनाती है।**

10.लुट्टन की मृत्यु का दृश्य पाठक के मन में क्या करुणा पैदा करता है?

- **उत्तर: लुट्टन की मृत्यु अत्यंत कारुणिक है। जिस पहलवान ने सबको हिम्मत दी, वह अंत में अकेला और असहाय होकर मरा। उसकी लाश सड़ी-गली झोपड़ी में 'चित' पड़ी मिली, जो उसके स्वाभिमान की आखिरी हार थी। उसके शिष्यों का यह कहना कि वह कभी जिंदगी में 'चित' नहीं होना चाहता था, पाठक को रुला देता है। यह अंत केवल एक व्यक्ति की मौत नहीं, बल्कि उस पूरी परंपरा की मौत है जिसे लुट्टन ने अपने खून-पसीने से सींचा था। उसका फटे ढोल के साथ शांत हो जाना समाज की संवेदनहीनता पर एक बड़ा सवाल खड़ा करता है।**